गाज की रात

जीवन रोते-रोते सो गया था। सुषमा अलग खाट पर बैठी हारी हुई दृष्टि से कभी उसे देख लेती तो कभी अपने पति देवराज को, जो आँगन में झुँझलाहट से भरा टहल रहा था। हवा में उमस थी और सावनी आसमान में घुटन। उसी आसमान के नीचे सुषमा छितराई बदली-सी नज़र आ रही थी।

उसने सन्नाटे को तोड़ते हुए कहा, "अब लेट भी जाओ। इतना गुस्सा ठीक नहीं।"

देवराज चुप रहा। उसने पाँच बरस के जीवन को कठोर दृष्टि से देख कर उस दृष्टि को अँधेरे में समेट लिया। सुषमा ने फिर धीमी आवाज़ में कहा, "तुम इस बच्चे से भाग कर जाओगे भी कहाँ? यह तुम्हारा ही छोटा भाई है। मैं तो पराए घर की हूँ। मैं इसे अपना सकती हूँ तो तुम क्यों नहीं अपना सकते।"

देवराज ने सुषमा की ओर देखे बिना ही कहा, "मुझे इससे नफरत है। इसे देख कर मुझे उस सौतेली मा की याद आती है, जिसने मुझ से मेरे पिता तक को छीन लिया। उसने मुझे मा-बाप के सुख को जानने ही न दिया और''' और यह मुझे पत्नी के सुख से वंचित कर रहा है।"

सुषमा ने कोमल स्वर में कहा, "तुम्हें इस दूध पीते बच्चे से ईर्ष्या होती है।"

देवराज उसी तिक्त स्वर में बोला, "ईर्ष्या ही सही, क्योंकि मेरी जिन्दगी में ऐसा कभी कुछ रहा ही नहीं जिससे किसी अभागे से अभागे को भी ईर्ष्या होती।"

सुषमा को इस बात से आघात ही लगा। फिर भी वह संयत स्वर में बोली, "पर तुम अपना बदला एक अबोध बच्चे से क्यों ले रहे हो? बदला तुम्हें अपनी सौतेली मा से भी नहीं पिता से लेना चाहिए था। एक अधेड़